श्री विष्णु सहस्रनाम

भगवान विष्णु के सहस्रनाम की व्याख्या

भाग - 10

व्याख्याकार

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त आश्रम प्रकाशन

www.vmission.org.in

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

इस पुस्तिका में भगवान विष्णु के
901 से 1000 नाम तक की व्याख्या उपलब्ध है।

901. ॐ स्वस्तिदाय
902. ॐ स्वस्तिकृते
903. ॐ स्वस्तिने
904. ॐ स्वस्तिभुजे
905. ॐ स्वस्तिदक्षिणाय
906. ॐ अरौद्राय
907. ॐ कुण्डलिने
908. ॐ चक्रिणे
909. ॐ विक्रमिणे
910. ॐ ऊर्जितशासनाय
911. ॐ शब्दसहाय
912. ॐ शब्दातिगाय
913. ॐ शिशिराय
914. ॐ शर्वरीकराये
915. ॐ अक्रूराय
916. ॐ पेशलाय
917. ॐ दक्षाय
918. ॐ दक्षिणाय
919. ॐ क्षमिणां वराय
920. ॐ विद्वत्तमाय
921. ॐ वीतभयाय
922. ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय
923. ॐ उत्तारणाय
924. ॐ दुष्कृतिघ्ने
925. ॐ पुण्याय
926. ॐ दुःस्वप्ननाशनाय
927. ॐ वीरघ्ने
928. ॐ रक्षणाय
929. ॐ सद्भ्यो
930. ॐ जीवनाय
931. ॐ पर्यवस्थिताय
932. ॐ अनन्तरूपाय
933. ॐ अनन्तश्रिये
934. ॐ जितमन्यवे
935. ॐ भयापहाय
936. ॐ चतुरस्राय
937. ॐ गभीरात्मने
938. ॐ विदिशाय
939. ॐ व्यादिशाय
940. ॐ दिशाय
941. ॐ अनादये
942. ॐ भूर्भुवाय
943. ॐ लक्ष्म्यै
944. ॐ सुवीराय
945. ॐ रुचिरांगदाय
946. ॐ जननाय

947. ॐ जनजन्मादये नमः
948. ॐ भीमाय
949. ॐ भीमपराक्रमाय
950. ॐ आधारनिलयाय
951. ॐ अधात्रे
952. ॐ पुष्पहासाय
953. ॐ प्रजागराय
954. ॐ उर्ध्वगाय
955. ॐ सत्पथाचाराय
956. ॐ प्राणदाय
957. ॐ प्रणवाय
958. ॐ पणाय
959. ॐ प्रमाणाय
960. ॐ प्राणनिलयाय
961. ॐ प्राणभृते
962. ॐ प्राणजीवनाय
963. ॐ तत्त्वाय
964. ॐ तत्त्वविदे
965. ॐ एकात्मने
966. ॐ जन्ममृत्युजरातिगाय
967. ॐ भूर्भुवस्स्वस्तरवे
968. ॐ ताराय
969. ॐ सवित्रे
970. ॐ प्रपितमहाय
971. ॐ यज्ञाय
972. ॐ यज्ञपतये
973. ॐ यज्विने
974. ॐ यज्ञांगाय
975. ॐ यज्ञवाहनाय
976. ॐ यज्ञभृते
977. ॐ यज्ञकृते
978. ॐ यज्वने
979. ॐ यज्ञभुजे
980. ॐ यज्ञसाधनाय
981. ॐ यज्ञान्तकृते
982. ॐ यज्ञगुह्याय
983. ॐ अन्नाय
984. ॐ अन्नादा
985. ॐ आत्मयोनये
986. ॐ स्वयंजाताय
987. ॐ वैखानाय
988. ॐ सामगायनाय
989. ॐ देवकीनन्दनाय
990. ॐ स्रष्ट्रे
991. ॐ क्षितीशाय
992. ॐ पापनाशनाय
993. ॐ शंखभृते
994. ॐ नन्दकिने
995. ॐ चक्रिणे
996. ॐ शांगधन्वने
997. ॐ गदाधराय
998. ॐ रथांगपाणये
999. ॐ अक्षोभ्याय
1000. ॐ सर्वप्रहरणायुधाय नमः।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९०१ –

ॐ स्वस्तिकृते नमः

मंगल करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Benefactor.

भक्तानां स्वस्ति करोति इति स्वस्तिकृत् अर्थात् भक्तों का मंगल करते हैं, इसलिए वे स्वस्तिकृत् हैं। प्रत्येक जीव की समस्त इच्छाओं की गहराई में आनन्द की प्राप्ति की इच्छा होती है। जो भक्त भगवान् की महिमा को जानकर उन्हें पाने की तीव्र इच्छा से युक्त होता है। वह जैसे–जैसे परमात्मा के सन्निकट जाता है, वैसे–वैसे उसके अनुपात्त में उन्हें जीवन में आनन्द की अनुभूति होती है। इस तरह आनन्द देनेके द्वारा भक्तों का मंगल करते हैं – इसलिए वे स्वस्तिकृत् कहलाते हैं। उन मंगल करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९०२ –

ॐ स्वस्तिदाय नमः

मंगल देनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one Who is Bestower of Blessings.

भक्तानां स्वस्ति मंगलं ददाति इति स्वस्तिदः। अर्थात् भक्तों को स्वस्ति अर्थात् मंगल देते हैं, इसलिए स्वस्तिद हैं। जीवन में आनन्द ही मंगल है। प्रत्येक जीव जाने–अन्जाने परमानन्द चाहता है। भक्त भगवान् की महिमा को जानकर उन्हें पाने की इच्छा करता है। वह जैसे जैसे परमात्मा के निकट जाता है, वैसे वैसे उसके अनुपात्त में उन्हें आनन्द की अनुभूति होती है। इस प्रकार परमात्मा मंगल अर्थात् आनन्द देनेवाले होने से वे स्वस्तिद हैं। उन भक्तों को मंगल देनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९०३ –

ॐ स्वस्तिने नमः

मंगलस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Auspicious.

मंगलस्वरूपम् आत्मीयं परमानन्द लक्षणं स्वस्ति अर्थात् भगवान् का मंगलमय निजस्वरूप का परमानन्दरूप हैं, इसलिए वे स्वस्ति हैं। परमात्मा स्वयं ही आनन्द के धाम हैं, वे ही मुक्तिस्वरूप हैं। इसलिए वे स्वस्ति अर्थात् मंगलस्वरूप हैं।

उन मंगलस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९०४ -

ॐ स्वस्तिभुजे नमः

मंगलकी रक्षा करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who Preserves the Auspiciousness in devotees.

भक्तानां मंगलं स्वस्ति भुनक्ति इति वा स्वस्तिभुक् अर्थात् भक्तों के मंगलकी रक्षा करते हैं, इसलिए वे स्वस्तिभुक् हैं। भगवान्के प्रति शरणागति ही मंगलकारी होती है। शरणागति में सबसे बड़ी बाधा अहंकार होता है। भक्त में यदि जाने-अन्जाने अहंकार आदि रूप विकार आते है, तो उसे भंग करने के द्वारा उनके मंगल की रक्षा करते हैं। इसलिए वे स्वस्तिभुक् कहलाते हैं। उन भक्तों के मंगल की रक्षा करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९०५ –

ॐ स्वस्तिदक्षिणाय नमः

स्वस्तिदक्षिण रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Dexterous Distributor of Auspiciousness.

स्वस्तिरूपेण दक्षते वर्धते, स्वस्तिं दातु समर्थ इति वा स्वस्तिदक्षिणः अर्थात् स्वस्ति करनमें समर्थ हैं, इसलिए स्वस्तदक्षिण हैं। परमात्मा स्वयं आनन्दस्वरूप होनेसे मंगलस्वरूप हैं। इसलिए वे भक्तों को आनन्द रूप मंगल देनेमें सक्षम हैं। जैसे जैसे परमात्मा के निकट कोई जाता है, वैसे वैसे उनमें आनन्द में अभिवृद्धि होती जाती है। इसलिए वे स्वस्तिदक्षिण हैं। उन स्वस्तिदक्षिण रूप परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९०६ –

ॐ अरौद्राय नमः

अरौद्ररूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the One Who is Devoid of Negativities.

कर्म रौद्रम्, रागश्च रौद्रः, कोपश्च रौद्रः, यस्य रौद्रत्रयं नास्ति अवाप्तसर्वकामत्वेन रागद्वेषादेः अभावात् स अरौद्रः। अर्थात् कर्म, राग और कोप ये रौद्र हैं, आप्तकाम होनेसे जिनमें ये तीनों रौद्र नहीं हैं, वे भगवान् अरौद्र हैं। अपूर्ण और असुरक्षाकी धारणासे युक्त जीव इसे दूर करनेकी इच्छासे प्रेरित होकर कर्म करता है, उसके उपरान्त कर्मफलके प्रति आश्रित होकर रागादिसे युक्त होता है और परिणामस्वरूप क्रोधादि विकार उत्पन्न होते है। यह सब संसारकी गर्तमें ले जानेवाले रौद्र हैं। परमात्मा स्वयं पूर्णस्वरूप होनेसे उनमें इन रौद्रका अभाव हैं। उन अरौद्ररूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९०७ -

ॐ कुण्डलिने नमः

शेषशायी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Coiled Power.

शेषरूपभाक् कुण्डली इति कुण्डली। अर्थात् शेषरूपधारी होनेसे कुण्डली हैं। भगवान् विष्णु क्षीरसागरमें शेषनाग रूप कुण्डली को अपनी शय्या बनाकर उन पर शयन करते हैं। इस प्रकार उन्होंने शेषरूप कुण्डली को अपने वशमें रखा होनेसे वे कुण्डली कहलाते हैं।

उन शेषनाग पर विराजमान परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १०८ –

ॐ चक्रिणे नमः

सुदर्शन चक्रधारी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Wielder of Discus.

समस्तलोकरक्षार्थं मनस्तत्त्वात्मकं सुदर्शनाख्यं चक्रं धत्ते इति चक्री। अर्थात् सम्पूर्ण लोकोंकी रक्षाके लिए मनस्तत्त्वरूप सुदर्शनचक्र धारण करते हैं, इसलिए चक्री हैं। सुदर्शन अर्थात् सुन्दर दर्शन अर्थात् सत्यस्वरूपका ज्ञान। भगवान् विष्णुका सुदर्शन चक्र भी इसी जीव, जगत और ईश्वरके समस्त रहस्योंके सत्यके ज्ञानका प्रतीक है। उसके माध्यमसे वे अधर्मसे युक्त आसुरी शक्तियोंका विनाश करके समस्त ब्रह्माण्ड की रक्षा करते हैं। सुदर्शन चक्रको धारण करनेके कारण वे चक्री कहलाते हैं। उन सुदर्शन चक्रधारी परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९०९ –

ॐ विक्रमिणे नमः

पराक्रमी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one Who is Valorous.

विक्रमः पादविक्षेपः, शौर्यं वा; द्वयं चाशेषपुरुषेभ्यो विलक्षणम् अस्येति विक्रमी। अर्थात् भगवान्‌का विक्रम–पादविक्षेप अथवा शूरवीरता दोनों ही समस्त पुरुषोंसे विलक्षण हैं, इसलिए वे विक्रमी हैं। भगवान्‌ने वामनरूप धारण करके तीनों लोकको तीन पग भूमि में समाविष्ट कर लिया था। इसलिए उनका पादविक्षेप अन्य सबसे विलक्षण है। तथा उनका पराक्रम भी सर्वथा विलक्षण होनेसे असुरोंके बढ़ते आतंकसे समस्त ब्रह्माण्डकी रक्षा करने हेतु उन्हें ही निवेदन किया जाता है। उन विक्रमी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९१० -

ॐ ऊर्जितशासनाय नमः

श्रुति-स्मृतिरूप महान् शासनवाले परमात्माको नमस्कार।

I salute the one who is the Mighty Commander.

श्रुतिस्मृतिलक्षणम् ऊर्जितं शासनं अस्येति ऊर्जित-शासनः। अर्थात् उनका श्रुति-स्मृतिरूप शासन अत्यन्त उत्कृष्ट है, इसलिए वे ऊर्जितशासन हैं। जीव के अभ्युदय और निःश्रेयस की सिद्धि हेतु सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही परमात्माने स्वयं श्रुति और स्मृतिरूप शासन प्रदान किया है। इससे जीव के अभ्युदय और निःश्रेयस् की सिद्धिके साथ ही समस्त सृष्टिका मंगल होता है। ऐसा महान् श्रुति और स्मृतिरूप शासन होनेसे वे ऊर्जितशासन कहलाते हैं। उन परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९११ –

ॐ शब्दातिगाय नमः

शब्द से परे परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one Who is the Indescribable.

शब्दप्रवृत्तिहेतूनां जात्यादीनां असम्भवात् शब्देन वक्तुं अशक्यत्वात् शब्दातिगः। अर्थात् शब्दकी प्रवृत्तिके हेतु जाति आदि भगवान्में सम्भव न होनेके कारण वे शब्दसे नहीं कहे जा सकते, इसलिए वे शब्दातिग हैं। किसी भी वस्तु अथवा विषयको उसकी जाति, क्रिया, गुण अथवा सम्बन्धके माध्यमसे बताकर उसका ज्ञान उत्पन्न कराया जा सकता है। किन्तु परमात्मामें जाति, गुण, क्रिया और सम्बन्धका अभाव होनेसे उन्हें शब्दके द्वारा बताना असम्भव होता है। इसलिए वे शब्दातिग कहलाते हैं। उन शब्दसे परे परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९१२ –

ॐ शब्दसहाय नमः

वेदोंके द्वारा ज्ञात परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Invoked by Vedas.

सर्वेवेदाः तात्पर्येण तमेव वदन्ति इति शब्दसहः; 'सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति' इति श्रुतेः। अर्थात् समस्त वेद तात्पर्यरूपसे भगवान्‌का ही वर्णन करते हैं, इसलिए वे शब्दसह हैं। 'जिस पदका समस्त वेद वर्णन करते हैं' इस प्रकार श्रुति बताती है। वेद शब्दराशि हैं। उसमें कर्म, उपासना तथा जीव, जगत, ईश्वर आदिसे सम्बद्ध विविध विषयक ज्ञान प्राप्त होता है। विषयोंकी विविधता प्रतीत होती है, जिसका प्रयोजन किसी भी धरातल पर विद्यमान जीवको वहांसे परमात्माकी प्राप्तिकी दिशामें यात्रा कराना ही है। इसलिए वे शब्दसह कहलाते हैं। उन वेदोंके द्वारा ज्ञात परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९१३ –

ॐ शिशिराय नमः

त्रिविध तापसे मुक्ति देनेवाले परमात्माको नमस्कार।

I salute the Cool Arbour (of Worldly People).

तापत्रयाभितप्तानां विश्रामस्थानत्वात् शिशिरः। अर्थात् तापत्रयसे तपे हुओंके लिए विश्रामके स्थान होनेके कारण शिशिर हैं। जीव अपने स्वस्वरूपके अज्ञानके कारण ही संसारके त्रिविध तापोंसे संतप्त होता है। जिस समय वह परमात्माको प्राप्त कर लेता है अर्थात् अपनी आत्माकी तरहसे ही विराजमान परमात्माको अपने स्वस्वरूपकी तरह जान लेता है, तब ही उन संसारके त्रिविध तापोंसे मुक्त हो जाता है। इस प्रकार मानों परमात्मा ही जीवको अपने साक्षात्कारके द्वारा त्रिविध तापोंसे मुक्त करने के कारण शिशिर कहे जाते हैं। उन त्रिविध तापोंसे मुक्ति दिलानेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९१४ –

ॐ शर्वरीकराय नमः

रात्रिके करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Creator of Darkness.

संसारिणाम् आत्मा शर्वरी इव शर्वरीः ज्ञानिनां पुनः संसारः शर्वरीः तामुभयेषां करोति इति शर्वरीकरः। अर्थात् संसारियोंके लिए आत्मा शर्वरी अर्थात् रात्रिके समान तथा ज्ञानियोंके लिए संसार ही रात्रि है। उन दोनोंकी ज्ञान और अज्ञानकी निद्रारूप रात्रियोंके करनेवाले होनेसे भगवान् शर्वरीकर हैं। गीतामें कहा है – 'समस्त भूतोंकी जो रात्रि है उसमें संयमी पुरुष जागता है और जिसमें सब भूत जागते हैं, वह ज्ञानियोंके लिए रात्रि हैं।' एवं ज्ञानी और अज्ञानीकी निद्रारूप रात्रि परमात्माके ज्ञान और अज्ञानसे सम्बद्ध होनेसे वे ही रात्रिके करनेवाले हैं। उन परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९१५ –

ॐ अक्रूराय नमः

क्रूरतासे रहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Never-cruel (Benevolent).

क्रौर्यं नाम मनोधर्मः प्रकोपजः आन्तरः सन्तापः साभिनिवेशः, अवाप्तसमस्तकामत्वात् कामाभावादेव कोप अभावः, तस्मात् क्रौर्यमस्य नास्ति इति अक्रूरः। अर्थात् क्रूरता मन का धर्म है, यह क्रोधसे उत्पन्न होनेवाला अभिनिवेशयुक्त आन्तरिक सन्ताप है। आप्तकाम होनेसे कामनाओंका अभाव होनेके कारण ही भगवान् में क्रोधका भी अभाव है, अतः भगवान् में क्रूरता नहीं है, इसलिए वे अक्रूर हैं।

उन क्रूरता से रहित परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९१६ –

ॐ पेशलाय नमः

सौम्यस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the One Who is Supremely Soft.

कर्मणा मनसा वाचा वपुषा च शोभनत्वात् पेशलः। अर्थात् कर्म, मन, वाणी और शरीरसे सुन्दर होनेके कारण भगवान् पेशल हैं। परमात्मा पूर्णस्वरूप हैं। अतः उनकी प्रत्येक अभिव्यक्ति पूर्णता की ही मूर्तिमान रूप होनेसे अत्यन्त सुन्दर, आनन्दमयी और प्रेममयी है। इसलिए वे सुन्दर तथा अत्यन्त सौम्य है। उन अत्यन्त सौम्यस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९१७ -

ॐ दक्षाय नमः

कर्ममें दक्ष परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Adroit.

प्रवृद्धः शक्तः शीघ्रकारी च दक्षः त्रयं चैतत् परस्मिन् नियतम् इति दक्षः। अर्थात् बढ़ा-चढ़ा, शक्तिमान् तथा शीघ्र कार्य करनेवाला - ये तीन दक्ष हैं। ये परमात्मामें निश्चित हैं, इसलिए वे दक्ष हैं। किसी भी कर्ममें दक्षताका अभिप्राय सतत उत्कर्ष होना, कर्म करनेमें सक्षम तथा किसी भी परिस्थितिमें अविलम्ब निर्णय लेकर उसे क्रियान्वित करनेका सामर्थ्य होता है। भगवान्में ये तीनों गुण सहजरूपसे विराजमान होनेके कारण वे दक्ष हैं। उन क्रियादक्ष परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९१८ -

ॐ दक्षिणाय नमः

गमन और हिंसा करनेवाले परमात्माको नमस्कार।

I salute the one who is the Dissolver.

दक्षते गच्छति, हिनस्ति इति वा दक्षिणः, 'दक्ष गतिहंसनयोः इति धातुपाठात्। अर्थात् दक्ष धातुका गति और हिंसाके अर्थमें प्रयोग होता है।' इस धातुपाठके अनुसार भगवान् सब ओर जाते हैं तथा सबको मारते हैं, इसलिए वे दक्षिण हैं। भगवान् ही समस्त सृष्टिके उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करनेवाले होनेसे हिंसा अर्थ भी उनके लिए सार्थक होता है। तथा वे सर्वव्यापी होनेसे सब ओर गमन करनेवाले हैं, यह भी औपचारिक रूपसे कहा जा सकता है। इसलिए वे दक्षिण कहलाते हैं। सबका प्रलयकर्ता तथा सब ओर गमन करनेवाले उन परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९१९ –

ॐ क्षमिणांवराय नमः

क्षमा करनेवालोंमें श्रेष्ठ परमात्माको नमस्कार।

I salute the one Who is Supremely Patient.

क्षमावतां योगिनां च पृथिव्यादीनां भारधारकाणां च श्रेष्ठ इति क्षमिणां वरः। अर्थात् क्षमा करनेवाले योगियोंमें और भार धारण करनेवाले पृथ्वी आदिमें श्रेष्ठ हैं, इसलिए क्षमिणां वर हैं। भगवान् अपने प्रति जीवके दोष तथा दोषपूर्ण कर्मोंको सदैव क्षमा कर देते हैं। किन्तु उनके कर्मोंसे जब समष्टिकी हानि होती है, तब ही उसे दण्डित करते हैं। इसलिए वे क्षमा करनेवालोंमें श्रेष्ठ कहे जाते हैं। उन क्षमा करनेवालोंमें श्रेष्ठ परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९२० –

ॐ विद्वत्तमाय नमः

सबसे विद्वान परमात्माको नमस्कार।

I salute the one who is of the Greatest Wisdom.

निरस्तातिशयं ज्ञानं सर्वदा सर्वगोचरमस्य अस्ति नेतरेषां इति विद्वत्तमः। अर्थात् भगवान्को सदा सब प्रकार का निरतिशय ज्ञान है और किसीको नहीं है, इसलिए वे विद्वत्तम हैं। सम्पूर्ण परा और अपराज्ञानके स्रोतरूप वेदोंकी उत्पत्ति परमात्मासे ही हुई है। इसलिए उनमें समस्त ज्ञान पहलेसे ही विराजमान है। समस्त ज्ञानकी परम्पराके आदिगुरु परमात्माका ज्ञान अतुलनीय हैं। इसलिए उनकी किसीभी ज्ञानवान्से तुलना तक नहीं की जा सकती है। उन सबसे विद्वान् परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९२१ –

ॐ वीतभयाय नमः

भयरहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one Who is the Fearless.

वीतं विगतं भयं सांसारिकं संसारलक्षणं वा अस्येति वीतभयः, सर्वेश्वरत्वात् नित्यमुक्तत्वाच्च। सर्वेश्वर और नित्यमुक्त होनेके कारण भगवान्का सांसारिक अर्थात् संसाररूप भय निवृत्त हो गया है, इसलिए वे वीतभय हैं। अज्ञानसे युक्त जीव औपाधिक सीमाओंको अपनी सीमाएं मानकर सतत जन्मादि विकारोंकी पीडासे युक्त असुरक्षित और भयग्रस्त होकर जीता है। परमात्मा अपनी पूर्णस्वरूपताके ज्ञानसे युक्त होनेके कारण वे किसी प्रकारकी सीमाओंसे बद्ध नहीं है, इसलिए सर्वथा भयसे मुक्त है। उन भयसे रहित परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९२२ -

ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय नमः

पुण्यकारी श्रवण और कीर्तनवाले परमात्माको नमस्कार।

I salute the one whose glory when heard & sung makes devotee meritorious.

पुण्यं पुण्यकरं श्रवणं कीर्तनं चास्य इति पुण्यश्रवणकीर्तनः, 'य इदं श्रृणुयाान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत्। नाशुभं प्राप्नुयात् किंचित् सोऽमुत्रेह च मानवः।।' इति श्रवणादिफलवचनात्।। अर्थात् भगवान्का श्रवण और कीर्तन पुण्यकारी है, इसलिए वे पुण्यश्रवणकीर्तन हैं।, क्योंकि 'जो इसे नित्य सुनेगा और जो इनका कीर्तन करेगा, उस मनुष्यको इस लोक या परलोक में बुरा फल नहीं मिलेगा।' इत्यादि वाक्योंसे इसी विष्णुसहस्रनाम की फलश्रुति बताई गई है। जिनका श्रवण और कीर्तन पुण्यकारी है, उन परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९२३ -

ॐ दुष्कृतिघ्ने नमः

पापियोंका हनन करनेवाले परमात्माको नमस्कार।

I salute the one who is Destroyer of Sins.

दुष्कृतीः पापसंज्ञिता हन्ति इति दुष्कृतिहा, ये पापकारिणः तान् हन्ति इति वा दुष्कृतिहा। अर्थात् पाप नामक दुष्कृतियोंका हनन करते हैं, इसलिए दुष्कृतिहा हैं, अथवा जो पाप करनेवाले हैं, उन्हे मारते हैं, इसलिए दुष्कृतिहा हैं। भगवान्‌का स्मरणमात्र जीवको संकुचिता और स्वार्थसे मुक्त करता है, अतः वह पापसे दूर होता है, इस प्रकार सम्भावित पापको नष्ट करते हैं। जीव स्वयं पापसे निवृत्त नहीं होने पर सृष्टिमें धर्मकी व्यवस्था बनाए रखनेके लिए तथा जीवोंके कल्याण हेतु भगवान् उसका विनाश करते हैं। उन पापका हनन करनेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १२४ –

ॐ पुण्याय नमः

पुण्यस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Supremely Pure.

स्मरणादि कुर्वतां सर्वेषां पुण्यं करोति इति पुण्यः। अर्थात् स्मरण आदि करनेवाले सब पुरुषोंका पुण्य-कर्म सम्पन्न करते हैं, इसलिए वे पुण्य हैं। भगवान्‌की महिमा अपरम्पार है। उनकी अपार महिमाका स्मरण करनेसे अभिमानका विसर्जन होता जाता है। समस्त पापकी जड़ अभिमान होती है। अतः अभिमानका विसर्जन होनेसे ही मन पवित्र होता जाता है। इस प्रकार भगवान्‌का स्मरण मात्र मनको पवित्र करनेवाला होनेसे उन्हें पुण्य कहा जाता है। उन पुण्यस्वरूप परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९२५ –

ॐ दुःस्वप्ननाशनाय नमः

दुःस्वप्न नष्ट करनेवाले परमात्माको नमस्कार।

I salute the One Who is Dispeller of the Horrible Dream of Samsar.

भाविनो अनर्थस्य सूचकान् दुःस्वप्नान् नाशयति ध्यातः स्तुतः कीर्तितः पूजितश्च इति दुःस्वप्ननाशनः। अर्थात् ध्यान, स्मरण, कीर्तन और पूजन किए जानेपर भावी अनर्थ के सूचक दुःस्वप्नों को नष्ट कर देते हैं, इसलिए दुःस्वप्ननाशन हैं। अज्ञानरूप निद्रामें सोया हुआ जीव संसाररूप स्वप्नको सत्य मानकर भयभीत होकर जीता है। परमात्मारूप सत्यका ज्ञान प्राप्त करके अज्ञानकी निद्रासे जग कर संसाररूप भयंकर स्वप्नसे जग जाता है। उन संसाररूप दुःस्वप्नका नाश करनेवाले को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९२६ –

ॐ वीरघ्ने नमः

अज्ञानरूप असुरके नाशक परमात्माको नमस्कार।

I salute the Culminator of the Whirl of Samsara.

विविधाः संसारिणां गतिर्मुक्तिप्रदानेन हन्ति इति वीरहा। अर्थात् संसारियोंको मुक्ति देकर उनकी विविध गतियोंका हनन करते हैं, इसलिए वीरहा हैं। जीवकी जन्म–जन्मान्तरकी संसारकी पीडाका कारण अज्ञान ही है। किन्तु जब वो भगवान् की शरण लेता है, तो उन्हें अपने ज्ञानरूप भक्तिका प्रसाद देकर अज्ञानरूप असुरका नाश करके संसारकी गतियोंको समाप्त करते हैं और उसे मुक्ति प्रदान करते हैं। इसलिए वे बलशाली अज्ञानरूप असुरका नाश करनेवाले होनेसे वीरहा कहे जाते हैं। उन बलशाली अज्ञानरूप असुर का नाश करनेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १२७ –

ॐ रक्षणाय नमः

सृष्टिकी रक्षा करनेवाले परमात्माको नमस्कार।

I salute the one who is the Protector.

सत्त्वं गुणमधिष्ठाय जगत्त्रयं रक्षम् रक्षणः अर्थात् सत्त्वगुणके आश्रय से तीनों लोकोंकी रक्षा करनेके कारण रक्षण हैं। भगवान् अपनी त्रिगुणात्मिका मायाको धारण करके सत्वगुण की प्रधानतासे अपनी बनाई हुई इस सृष्टिकी रक्षा करते हैं। इसलिए वे सृष्टिकी रक्षा करनेके कारण रक्षण कहलाते हैं।

उन सृष्टिकी रक्षा करनेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९२८ –

ॐ सद्भ्यो नमः

सन्तरूप से विराजमान परमात्माको नमस्कार।

I salute the one Who is The Righteous.

सन्मार्गवर्तिनः सन्तः तद्रूपेण विद्याविनयवृद्धये स एव वर्तत इति सन्तः। अर्थात् सन्मार्ग पर चलनेवालोंको सन्त कहते हैं, विद्या और विनयकी वृद्धिके लिए सन्तरूपसे भगवान् स्वयं ही विराजते हैं, इसलिए वे सन्त हैं। सृष्टिमें धर्मकी व्यवस्थाको सुन्दररूपसे बनाए रखनेके लिए भगवान् स्वयं ही मानों सन्तरूपसे विराजमान रहते हुए सृष्टिमें विचरण करते हैं। इसलिए वे सन्त कहे जाते हैं। उन सन्मार्गगामीके रूपमें स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९२९ –

ॐ जीवनाय नमः

जीवनतत्त्व रूप परमात्माको नमस्कार।

I salute the one who is the Life.

सर्वाः प्रजाः प्राणरूपेण जीवयन् जीवनः। अर्थात् प्राणरूपसे समस्त प्रजाको जीवित रखनेके कारण जीवन हैं। प्रत्येक जीवका जीवन उसके प्राणोंको धारण करनेवाले चेतनतत्त्व की वजहसे ही होता है। भगवान् स्वयं जीवमें चेतनता रूपसे स्थित रहकर जीवके प्राणोंको धारण करके उसे जीवित रखते हैं। इसलिए वे जीवनतत्त्व कहलाते हैं। उन जीवनतत्त्व रूप परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९३० -

ॐ उत्तारणाय नमः

संसारसे पार लगानेवाले परमात्माको नमस्कार।

I salute The Saviour (Uplifter).

संसारसागरात् उत्तारयति इति उत्तारणः। अर्थात् संसार-सागर से उतारते हैं, इसलिए वे उत्तारण हैं। जीव अपनी वास्तविकताको नहीं जाननेकी वजहसे मायाके वशीभूत होकर संसारकी पीडाओंसे पीडित होकर अपार संसार-सागरमें गोते खाता रहता है। किन्तु जब वह मायापति परमात्माकी शरणमें जाता है, तो वह अपने स्वस्वरूपके ज्ञानके लिए पात्र बनकर अन्ततः परामात्माको अपनी आत्माकी तरह जान लेता है और संसारसागरसे मुक्त हो जाता है। इस प्रकार परमात्मा ही अपने प्रति शरणगत जीवको संसारसागरसे पार लगाते हैं, इसलिए वे उत्तारण है। उन संसारसे पार उतारनेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९३१ –

ॐ पर्यवस्थिताय नमः

सर्वत्र व्याप्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one Who is All Pervading.

परितः सर्वतो विश्वं व्याप्य अवस्थितः इति पर्यवस्थितः। अर्थात् विश्वको परितः अर्थात् सब ओर से व्याप्त करके स्थित हैं, इसलिए वे पर्यवस्थित हैं। परमात्मा सर्वव्यापी हैं। समस्त विश्व जल में असंख्य लहरोंकी तरह परमात्मामें स्थित है। इसलिए जिस प्रकार जल सभी लहरों को व्याप्त करके स्थित रहता है, वैसे ही परमात्मा समस्त विश्व को व्याप्त करके स्थित हैं। इसलिए वे पर्यवस्थित कहलाते हैं।

उन सर्वत्र व्याप्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १३२ –

ॐ अनन्ताय नमः

अनन्तरूपोंमें व्यक्त परमात्माको नमस्कार।

I salute the one who is Of Infinite Forms.

अनन्तानि रूपाणि अस्य विश्वप्रपंचरूपेण स्थितस्य इति अनन्तरूपः। अर्थात् प्रपंचरूप विश्वकी तरह स्थित भगवान्‌के अनन्तरूप हैं, इसलिए वे अनन्तरूप कहे जाते हैं। जिस प्रकार जल ही असंख्य लहरों, समुद्र आदिकी तरह स्थित होता है। वैसे ही परमात्मा ही इन समस्त नामरूपात्मक जगतके अनन्त–अनन्त रूपोंकी तरह अभिव्यक्त हैं। इसलिए वे अनन्तस्वरूप कहलाते हैं।

उन अनन्त रूपोंकी तरहसे स्थित परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९३३ -

ॐ अनन्तश्रिये नमः

अनन्त शक्तिसे युक्त परमात्माको नमस्कार।

I salute who is of Infinite Powers.

अनन्ता अपरिमिता श्रीः परा शक्तिः अस्य इति अनन्तश्रीः, 'परास्य शक्तिः विविधा एव श्रूयते' इति श्रुतेः। अर्थात् भगवान्‌की श्री अर्थात् पराशक्ति अनन्त अर्थात् अपरिमित है, इसलिए वे अनन्तश्री हैं। श्रुति कहती है - इसकी पराशक्ति विविध प्रकारकी ही सुनी जाती है। भगवान्‌की मुख्य रूप से तीन शक्तियां- ज्ञानशक्ति, इच्छाशक्ति और क्रियाशक्ति है, यह शक्तियां अन्तहीन मात्रामें विराजमान है। इन्हीं शक्तियोंके द्वारा परमात्मा सृष्टिका संचालन करते हैं। इसलिए वे अनन्तश्री कहलाते हैं। उन अनन्त शक्तिसे युक्त परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १३४ -

ॐ जितमन्यवे नमः

क्रोधको वशमें किए हुए परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Conqueror of Anger.

मन्युः क्रोधो जितः येन सः जितमन्युः। अर्थात् जिन्होंने मन्यु अर्थात् क्रोधको जीत लिया है, वे भगवान् जितमन्यु हैं। स्वकेन्द्रित कामनाकी पूर्तिके अभावमें ही क्रोधका जन्म होता है। परमात्मा पूर्णस्वरूप होनेसे उनमें स्वकेन्द्रित कामनाका अभाव है, अतः उन्हें क्रोध नहीं आता है, किन्तु वे क्रोध करनेमें स्वतंत्र हैं। जहां सृष्टिके संचालन तथा धर्मकी व्यवस्थामें कोई व्यवधान बनता है, तो उन्हें दण्डित करनेके लिए वे क्रोधको एक शस्त्र की तरह धारण करते हैं। इसलिए वे जितमन्यु कहलाते हैं। उन क्रोधको वशमें किए हुए परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९३५ -

ॐ भयापहाय नमः

भय नष्ट करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Dispeller of Fears.

भयं संसारजं पुंसामपघ्नन् भयापहः। अर्थात् पुरुषोंका संसारजन्य भय नष्ट करनेके कारण भयापह हैं। अपने स्वरूपके अज्ञानकी वजहसे जीव जन्म-मृत्यु आदिके भयसे युक्त रहता है। जीवका सत्य परमात्मा होते हुए भी अज्ञानवशात् स्वयंको जन्म-मृत्यवान् संकुचित जीव मानकर जीता है, इसलिए वह भयसे ग्रस्त रहता है। जब वह परमात्माको अपनी आत्माकी तरह जान लेता हैं, तो जन्मादिके भयसे मुक्त हो जाता है। इसलिए परमात्मा भयको नष्ट करनेवाले भयापह कहलाते हैं। उन जन्मादि भयके नष्ट करनेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९३६ -

ॐ चतुरस्राय नमः

न्याय करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the One Who is the Perfect Judge.

न्यायसमवेतः चतुरस्रः, पुसां कर्मानुरूपं फलं प्रयच्छति इति। अर्थात् पुरुषोंको उनके कर्म अनुसार फल देते हैं, इसलिए न्याययुक्त होनेके कारण चतुरस्र हैं। जिस प्रकार चौकोर आकृतिकी चारों बाजू समान होती है। वैसे ही परमात्माका कर्मानुरूप फल देनेका स्वभाव उनकी समदृष्टिका सूचक है। सबको बगैर पक्षपातके कर्मानुरूप फल देते हैं, इसलिए वे चतुरस्र कहलाते हैं।

उन कर्मानुरूप फल देनेके द्वारा न्याय करनेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १३७ –

ॐ गभीरात्मने नमः

अथाह परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Unfathomable.

आत्मा स्वरूपं चित्तं वा गभीरं परिच्छेत्तुं अशक्यं अस्येति गभीरात्मा। अर्थात् भगवान्का आत्मा अर्थात् स्वरूप अथवा मन गम्भीर है, उसको नापा नहीं जा सकता है, इसलिए वे गभीरात्मा हैं। भगवान् किसी भी प्रकारके संस्कार वा वासनाके वशीभूत नहीं होते हैं, इसलिए उनके मनकी गहराईको समझना अत्यन्त कठिन है। इसलिए वे गभीरात्मा कहलाते हैं।

उन अत्यन्त गहराईसे युक्त परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १३८ -

ॐ विदिशाय नमः

पात्रताके अनुरूप फल देनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Unique Distributor (of Karma Phala).

विविधानि फलानि अधिकारिभ्यो विशेषेण दिशति इति विदिशः। अर्थात् अधिकारियोंको विशेषरूपसे विविध प्रकारके फल देते हैं, इसलिए भगवान् विदिश हैं। भगवान् ही कर्मफलदाता हैं। इसलिए जो जैसा कर्म करता है, उसे उसकी पात्रताके अनुरूप फल प्रदान करते हैं। उसमें किसी भी प्रकारका पक्षपात नहीं करते हैं, इसलिए वे विदिश कहलाते हैं। उन पात्रताके अनुरूप फल देनेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९३९ -

ॐ व्यादिशाय नमः

देवताओंको आदेश देनेवाले परमात्माको नमस्कार।

I salute the Unique Commander.

विविधामाज्ञां शक्रादीनां कुर्वन् व्यादिशः। अर्थात् इन्द्रादिको विविध प्रकारकी आज्ञा करनेसे व्यादिश हैं। इन्द्र आदि समस्त देवता परमात्माके आज्ञाकारी सेवक हैं, परमात्मा उन्हें उनकी प्रकृतिके अनुरूप जो आज्ञा करते हैं, उसका वे पालन करते हैं, इसलिए सृष्टिकी सुन्दर व्यवस्था व संचालन होता है।

उन देवताओंको आदेश देनेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९४० –

ॐ दिशाय नमः

वेदरूपसे स्थित परमात्माको नमस्कार।

I salute the one Who is the Seer (Teacher).

समस्तानां कर्मणां फलानि दिशन् वेदात्मना दिशः। अर्थात् वेदरूपसे समस्त कर्मियोंको उनके कर्मोंके फल देते हैं, इसलिए दिश हैं। जीवोंके संसारसे उद्धार हेतु परमात्माने स्वयं उन्हें वेदोंमें विविध प्रकारके यज्ञ, उसका तरीका तथा उसमें समाविष्ट की जानेवाली दृष्टिका प्रतिपादन किया हैं। जीव अपनी कामनापूर्ति हेतु उसका आश्रय लेकर कर्म करता हैं, उससे न केवल इष्टफल की प्राप्ति करता हैं, किन्तु वासनाके बोझसे मुक्त होकर श्रेयपथ पर अग्रसर होता है। इसलिए वे दिश कहलाते हैं। उन वेदरूपसे स्थित परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९४१ –

ॐ अनादये नमः

कारणरहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Beginningless.

आदिः कारणम् अस्य न विद्यते इति अनादिः, सर्वकारणत्वात्। अर्थात् सबके कारण होनेसे भगवान्का कोई आदि अर्थात् कारण नहीं है, इसलिए वे अनादि हैं। यह सम्पूर्ण चर-अचर जगत परमात्मासे ही उत्पन्न हुआ है, किन्तु परमात्मा अजन्मा होनेसे उनका जन्म किसी से भी नहीं होता है, इसलिए परमात्मा अनादि कहलाते हैं।

उन कारणरहित परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९४२ -

ॐ भूर्भुवाय नमः

भूमिके आधारभूत परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is

The Substratum of the Earth.

भूः आधारः, भुवः सर्वभूताश्रयत्वेन प्रसिद्धाया भूम्याः भुवोऽपि भूः इति भूर्भुवः। अर्थात् भू आधार को कहते हैं, भुवः अर्थात् समस्त भूतों के आधाररूप से प्रसिद्ध भूमि की भी भू आधार हैं, इसलिए वे भूर्भुवः हैं। परमात्मा ही स्वयं समस्त भूतों के आधारभूत होने से भूर्भुवः कहलाते हैं।

उन भूमि के भी आधारभूत प्रभु को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९४३ -

ॐ लक्ष्म्यै नमः

आत्मविद्या रूपी परमात्मा को नमस्कार।

I salute who is the Knowledge of Self.

लक्ष्मीः आत्मविद्या, 'आत्मविद्या च देवि त्वम्' इति श्रीस्तुतौ। अर्थात् आत्मविद्या को ही लक्ष्मी कहा है। श्रीस्तुतिमें कहा है - 'हे देवि! आत्मविद्या भी तू ही हैं।' शब्दातीत परमात्माके विषय में जो भी ज्ञान कराके उनकी चेतना उत्पन्न कर सके, वह स्वयं परमात्माकी विभूति ही हो सकती है। लक्ष्मी अर्थात् आत्मविद्या भी परमात्माका ज्ञान कराती हैं, इसलिए वह परमात्मस्वरूपा ही हैं।

उन आत्मविद्यारूप से स्थित प्रभु को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १४४ –

ॐ सुवीराय नमः

शुभ गतियों वाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who has noble ends.

शोभना विविधा ईरा गतयो यस्य स सुवीरः; शोभनं विविधं ईर्ते इति वा सुवीरः। अर्थात् जिनकी विविध ईरा – गतियां शुभ हैं, वे भगवान् सुवीर हैं। भगवान्की गतियां अर्थात् वे अनेकों बार कर्मके वशीभूत नहीं होते हुए स्वेच्छा से शरीर धारण करके अवतार लेते हैं। प्रत्येक अवतार विशेष प्रयोजनको ध्यानमें रखकर होता है, इससे सृष्टिका कल्याण ही होता है। विविध अवतारोंमें शुभ भावना निहित होनेकी वजह से उन्हें शुभ गतिवाले कहा जाता है। उन परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १४५ -

ॐ रुचिरांगदाय नमः

सुन्दर भुजबन्धसे युक्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Adorned with Splendid Shoulder-caps.

रुचिरे कल्याणे अंगदे अस्येति रुचिरांगदः। अर्थात् भगवान्‌के अंगद अर्थात् भुजबन्ध रुचिर अर्थात् कल्याणरूप हैं, इसलिए वे रुचिरांगद हैं। भगवान् अपनी अत्यन्त सशक्त भुजाओंके माध्यमसे वे बलशाली असुरोंका विनाश करते हैं और इस प्रकार सृष्टिमें धर्ममार्गका अनुसरण करनेवालोंकी रक्षा करते हैं। उन भुजाओं पर धारण किए बाजूबन्ध भी अत्यन्त शोभायमान होते है, इसलिए वे सुन्दर भुजबन्धसे युक्त कहलाते हैं। उन सुन्दर भुजबन्ध से युक्त परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १४६ -

ॐ जननाय नमः

जीवोंको उत्पन्न करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the One Who is the Progenitor.

जन्तून् जनयन् जननः अर्थात् जन्तुओंको उत्पन्न करनेके कारण जनन हैं। परमात्मा अपनी मायाशक्तिको धारण करके सृष्टिके समस्त जीवोंकी उत्पत्ति करते हैं, इसलिए वे जन्तुओंको अर्थात् जीवोंको उत्पन्न करनेवाले जनन कहलाते हैं।

उन समस्त जीवोंको उत्पन्न करनेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९४७ -

ॐ जनजन्मादये नमः

जीवोंके कारणभूत परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Prime Cause of Beings.

जनस्य जनिमतो जन्म उद्भवः तस्यादिः मूलकारणम् इति जनजन्मादिः। अर्थात् जन्म लेनेवाले जीवके जन्म अर्थात् उत्पत्तिके आदि यानी मूलकारण हैं, इसलिए जनजन्मादि हैं। यद्यपि सृष्टि परमात्माकी मायाशक्तिके द्वारा निर्मित है, किन्तु यह कार्य मायामें चेतनताके आदानसे ही सम्भव होता है। परमात्मा स्वयं मायामें चेतनताका आदान करके समस्त जीवोंको उत्पन्न करनेके द्वारा उसके कारण बनते हैं। इसलिए वे जीवोंके जन्मके आदिकारण कहलाते हैं। उन परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९४८ –

ॐ भीमाय नमः

भय स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is The Terrible.

भयहेतुत्वाद् भीमः, 'महद्भयं वज्रमुद्यतम्' इति श्रुतेः। अर्थात् भयके कारण होनेसे भीम हैं, श्रुति बताती है – 'महान् भयरूप वज्र उद्यत है।' सृष्टिकी व्यवस्था और संचालन हेतु समस्त प्रकृति अपने अपने नियमोंके अधीन रहकर कार्य करती है, उससे ऐसा लगता है कि मानों किसीके प्रति आदरपूर्वक भयके कारण अपने नियमोंका पालन करते है, इसलिए वे भीम कहलाते हैं।

उन भयस्वरूप परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९४९ –

ॐ भीमपराक्रमाय नमः

भयंकर पराक्रमवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one Who has Formidable Powers.

असुरादीनां भयहेतुः पराक्रमो अस्य अवतारेषु इति भीमपराक्रमः। अर्थात् अवतारोंमें भगवान्‌का पराक्रम असुरादिकोंके भयका कारण होता है। भगवान्‌का अवतार ही अधर्मके नाश हेतु होता है। वे अपने पराक्रमके द्वारा अधर्मके अवलम्बी असुरगणोंका विनाश करते हैं, इसलिए वे असुरलोग उनसे सदैव भयभीत रहते हैं। इस कारणसे वे भीमपराक्रम कहलाते हैं।

उन असुरोंके भयके हेतुरूप पराक्रमसे युक्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९५० –

ॐ आधारनिलयाय नमः

पंचमहाभूतोंके अधिष्ठानभूत परमात्माको नमस्कार।

I salute the one Who is the Fundamental Sustainer

पृथिव्यादीनां पंचभूतानां आधाराणाम् आधारत्वात् आधारनिलयः। अर्थात् पृथ्वी आदि पंचभूत आधारोंके भी आधार हैं, इसलिए परमेश्वर आधारनिलय हैं। इस नामरूपत्मक जगतका आधार पंचमहाभूत होते है। किन्तु उन पांचों महाभूतोंके भी अधिष्ठान रूप स्वयं परमात्मा होते हैं, इसलिए वे आधारनिलय कहलाते हैं।

उन समस्त जगतके आधारभूत पंचमहाभूतोंके भी अधिष्ठानस्वरूप परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९५१ –

ॐ अधात्रे नमः

स्वयंस्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one Who is the Supreme Controller.

स्वात्मना धृतस्य अस्य अन्यो धाता नास्ति इति अधाता। अर्थात् अपने आप स्थित हुए भगवान्‌का कोई और धाता अर्थात् बनानेवाला नहीं है, इसलिए वे अधाता हैं। परमात्मा सबके अधिष्ठानभूत तत्त्व होनेसे सबको धारण करते हैं, किन्तु उनसे पूर्व वा उनसे पृथक् कुछ भी नहीं होनेसे उन्हें धारण करनेवाला कोई नहीं है, वे स्वतःस्थित होनेसे अधाता कहलाते हैं। उन स्वतःस्थित, सबके अघिष्ठानभूत परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९५२ -

ॐ पुष्पहासाय नमः

सृष्टिरूपसे पुष्पवत् विकसित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Blooming like a Blossom.

मुकुलात्मना स्थितानां पुष्पाणां हासवत् प्रपंचरूपेण विकासः अस्येति पुष्पहासः अर्थात् कलिकारूपसे स्थित पुष्पोंके हास अर्थात् खिलनेके समान भगवान्का प्रपंचरूपसे विकास होता है, इसलिए वे पुष्पहास हैं। सृष्टिके पूर्वमें एकमात्र परमात्मा ही थे, वे संकल्पमात्रसे इस पंचभूतात्मक सृष्टिकी तरह वैसे ही अभिव्यक्त होते हैं, जैसे कि मानों एक कलीसे धीमे धीमें पुष्प खिलता है। इसलिए वे पुष्पहास कहलाते हैं। उन सृष्टिरूपसे पुष्पकी तरह विकसित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९५३ -

ॐ प्रजागराय नमः

सदैव जाग्रत परमात्मा को नमस्कार।

I salute who is Ever-awakened.

नित्यप्रबुद्धस्वरूपत्वात् प्रकर्षेण जाग्रति इति प्रजागरः। अर्थात् नित्य प्रबुद्ध होनेके कारण प्रकर्षरूपसे जागते हैं, इसलिए भगवान् प्रजागर हैं। जीव जहां अज्ञानरूप निद्रामें सोया हुआ है, वहीं परमात्मा सदैव अपनी ब्रह्मस्वरूपताके ज्ञानकी अवस्थामें जगे हुए हैं। इसलिए वे प्रजागर कहलाते हैं।

उन नित्य जाग्रत परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९५४ –

ॐ ऊर्ध्वगाय नमः

सबसे परे स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is The Ascedent.

सर्वेषामुपरि तिष्ठन् ऊर्ध्वगः अर्थात् सबसे ऊपर रहनेके कारण ऊर्ध्वग हैं। सभी जीव अज्ञानवशात् परमात्माकी मायाशक्तिके आधीन है। अतः उससे प्रभावित होकर सतत संसरण करते रहते है। परमात्मामें अज्ञान लेशमात्र भी नहीं है, इसलिए वे माया के अधीन नहीं हैं, किन्तु माया उनके अधीन रहती है। इस प्रकार वे मायासे भी परे स्थित होनेसे ऊर्ध्वग कहलाते हैं।

उन सबसे परे स्थित परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९५५ –

ॐ सत्पथाचाराय नमः

सत्यके पथ पर आरूढ़ परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Virtuous Conduct.

सतां कर्माणि सत्पथाः तान् आचरयति एष इति सत्पथाचारः। अर्थात् सत्पुरुषोंके कर्मोंको सत्पथ कहते हैं, उनका आचरण करते हैं, इसलिए सत्पथाचार हैं। परमात्मा स्वयं सत्यस्वरूप हैं, तथा वे सत्यको ही आधार बनाकर जगतका संचालन तथा व्यवस्था करते हैं। इस प्रकार वे सत्यके पथ पर ही चलनेके कारण सत्पथाचार कहे जाते हैं।

उन सदैव सत्यके पथ पर आरूढ़ परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९५६ -

ॐ प्राणदाय नमः

जीवन देनेवाले परमात्माको नमस्कार।

I salute the One Who is the Life-giver.

मृतान् परिक्षित् प्रभृतीन् जीवयन् प्राणदः। अर्थात् परिक्षित आदि मरे हुओंको जीवित करनेके कारण प्राणद हैं। समस्त जीव अपनी प्राणनक्रियाकी वजहसे जीवित रहता है। यह प्राण स्वतः जड़ होनेसे मृतवत् ही है। किन्तु परमात्मा उन प्राणोंको भी चेतना प्रदान करनेके द्वारा जीवन्त बनाते हैं, इसलिए वे प्राणन –शक्ति देनेके द्वारा जीवोंको जीवित रखनेके कारण प्राणद कहलाते हैं। उन जीवोंको जीवित रखनेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९५७ –

ॐ प्रणवाय नमः

ॐकार स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Sacred "OM".

प्रणवो नाम परमात्मनो वाचक ओंकारः; तदभेदोपचारेण अयं प्रणवः। अर्थात् परमात्माके वाचक ओंकारका नाम प्रणव है, उसके साथ अभेदका व्यवहार होनेसे परमात्मा प्रणव हैं। प्रणव अर्थात् 'ॐ' परमात्माका सर्व प्रथम शब्दरूपसे अवतरण है, इसलिए परमात्मा ही प्रणव अर्थात् ॐकार स्वरूप हैं।

उन ॐकार स्वरूप परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९५८ –

ॐ पणाय नमः

कर्मके संग्रहकर्ता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Supreme Manager.

पुण्यानि सर्वाणि कर्माणि पणं संगृह्य अधिकारिभ्यः तत्फलं प्रयच्छति इति वा लक्षणया पणः। अर्थात् समग्र पुण्यकर्मोंका पणरूपसे संग्रह करके अधिकारियोंको उनका फल देते हैं, इसलिए लक्षणावृत्तिसे पण कहे जाते हैं। जीवके द्वारा किए हुए कर्म समाप्त होने पर भी उन–उन कर्ताको अपने अपने कर्मका ही फल प्राप्त होता है, ऐसा लगता है कि मानों परमात्मा उनके जीवके कर्मको संग्रह करके उसका फल दे रहे हैं, इसलिए वे पण कहलाते हैं। उन कर्मका संग्रहकर्ता परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९५९ –

ॐ प्रमाणाय नमः

स्वयं ज्ञानस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one Who is the Means of Knowledge.

प्रमितिः संवित् स्वयंप्रभा प्रमाणम्, 'प्रज्ञानं ब्रह्म' इति श्रुतेः। अर्थात् प्रमिति संवित् अर्थात् स्वयं प्रभारूप होनेसे भगवान् प्रमाण हैं। श्रुति कहती है – 'प्रज्ञान ब्रह्म है।' परमात्मा स्वयं ज्ञानस्वरूप होनेसे उनकी प्रमिति अर्थात् ज्ञानके लिए किसी अन्य प्रमाणकी आवश्यकता नहीं होती है। मानों अपने होनेमें वे स्वयं ही प्रमाण हैं, इसलिए वे प्रमाणस्वरूप कहलाते हैं। उन स्वयं ज्ञानस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९६० -

ॐ प्राणनिलयाय नमः

प्राणके विलयस्थान परमात्माको नमस्कार।

I salute the one in Who is Substratum of Pranas.

प्राणा इन्द्रियाणि यत्र जीवे निलीयन्ते तत्परतन्त्रत्वात्, इति प्राणनिलयः अर्थात् उसके अधीन होनेसे प्राण अर्थात् इन्द्रियां जिस जीवमें लीन होती हैं, वह प्राण निलय है। जीव जब सुषुप्ति अवस्थामें जाता है, तब उनकी समस्त इन्द्रियां, मन आदि सुप्त रहते हैं, किन्तु उस समय प्राण ही जाग्रत रहकर सबको अपने अन्दर समाए रहते है। मृत्यु तथा प्रलयकालमें इस प्राणका जहां भी विलय होता है, वह परमात्मा हैं, जो सदैव जाग्रत रहते हैं। प्रलयकालमें अपने अन्दर जगतको लीन करनेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९६१ –

ॐ प्राणभृते नमः

प्राणपोषक परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one Who is Nourisher of Pranas.

पोषयन् अन्नरूपेण प्राणान् प्राणभृत् अर्थात् अन्नरूपसे प्राणोंका पोषण करनेके कारण प्राणभृत् हैं। प्राणके पोषित होने पर ही सब जीवोंका अस्तित्व बना रहता है। प्राणोंको पोषित करनेवाला अन्न होता है। परमात्मा स्वयं ही अन्नरूपसे अभिव्यक्त होकर प्राण का पोषण करते है, इसलिए वे प्राणोंका पोषण करनेवाले प्राणभृत कहलाते हैं। उन प्राणोंका पोषण करनेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९६२ -

ॐ प्राणजीवनाय नमः

प्राणको जीवन्त बनानेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Prana of Pranas.

प्राणिनो जीवयन् प्राणाख्यैः पवनैः प्राणजीवनः, 'न प्राणेन नापानेन मर्त्यो जीवति कश्चन् इतरेण तु जीवन्ति यस्मिन्नेतावुपाश्रितौ।' इति मन्त्रवर्णात्। अर्थात् प्राण नामक वायुसे प्राणियोंको जीवित रखनेके कारण प्राणजीवन हैं। श्रुति बताती है – 'कोई भी मनुष्य न प्राणसे जीता है, न अपानसे, किन्तु किसी औरसे ही जीते हैं, जिसमें ये प्राण और अपान दोनों आश्रित हैं।' मनुष्यको जीवित रखनेवाले प्राणवायुको भी चेतना प्रदान करनेके द्वारा जीवन्त बनाते हैं, इस वजहसे जड़ होते हुए भी प्राण जीवन्त होकर सक्षम होते हैं। उन प्राणको जीवन्त बनानेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९६३ -

ॐ तत्त्वाय नमः

तत्त्वस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute who is Absolute Reality.

तत्त्वं तथ्यममृतं सत्यं परमार्थतः सतत्त्वमिति एते एकार्थवाचिनः परमार्थसतो ब्रह्मणो वाचकाः शब्दाः। अर्थात् तथ्य, अमृत, सत्य और परमार्थतः सतत्त्व ये सब शब्द एक वास्तविक सत्स्वरूप ब्रह्मके ही वाचक हैं, अतः वह तत्त्व है। सबका अधिष्ठानभूत तत्त्व परमात्मा ही हैं। उन्हें ही ब्रह्म आदि शब्दोंसे लक्षित किया जाता है। वे ही सबके सारभूत होनेके कारण तत्त्व कहलाते हैं।

उन तत्त्वस्वरूप परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९६४ -

ॐ तत्त्वविदे नमः

अपने यथार्थको जाननेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Knower of Reality.

तत्त्वं स्वरूपं यथावद् वेत्ति इति तत्त्ववित्। अर्थात् तत्त्व अर्थात् स्वरूपको यथावत् जानते हैं, इसलिए भगवान् तत्त्ववित् हैं। जीव अपने तत्त्व अर्थात् यथार्थको नहीं जाननेके कारण संसारके वशीभूत होकर संसरण करता है। जब कि भगवान् अपने सत्यस्वरूप तत्त्वको जानते हैं। अतः अवतार लेकर विविध लीलाएं करने पर भी जन्मादिरूप संसारको प्राप्त नहीं करते हैं। इसलिए वे तत्त्वविद् कहलाते हैं।

उन अपने तत्त्वको जाननेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९६५ –

ॐ एकात्मने नमः

सबकी एक आत्मारूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the One Self.

एकश्च असौ आत्मा चेति एकात्मा, 'आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत्' इति श्रुतेः। अर्थात् भगवान् एक आत्मा हैं, इसलिए वे एकात्मा हैं। श्रुति कहती है – 'पहले यह एक आत्मा ही था।' सृष्टिके पूर्व भी वे ही एकमात्र थे, तथा वे ही अपनी मायाशक्तिसे अनेकों जीवोंके रूपमें प्रस्तुत हुए हैं। अनेकों जीवोंकी तरह प्रतीत होते हुए भी परमात्मा ही एकमात्र सबकी आत्मा हैं। सबकी एक आत्मारूप उन परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९६६ –

ॐ जन्ममृत्युजरातिगाय नमः

जन्मादिसे परे परमात्मा को नमस्कार।

I salute the One Who is Beyond Modifications.

जायते अस्ति वर्धते विपरिणमते अपक्षीयते नश्यति इति षड्भावविकारान् अतीत्य गच्छति इति जन्ममृत्युजरातिगः। अर्थात् जन्म लेना, बढ़ना, बदलना, क्षीण होना और नष्ट होना – ये छः भाव–विकार हैं। इनका अतिक्रमण कर जाते हैं, इसलिए भगवान् जन्ममृत्युजरातिग हैं। परमात्मा स्वयं मायासे परे, अजन्मा और अविकारी हैं, इसलिए उनमें जन्म–मृत्यु आदि कोई विकार नहीं होनेसे वे जन्ममृत्युजरातिग कहलाते हैं।

उन जन्मादिसे परे परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९६७ -

ॐ भूर्भुवःस्वस्तरवे नमः

जगतरूप वृक्षकी तरह स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Cosmic Sap of Three Worlds.

भूर्भुवःस्वः समाख्यलोकत्रय संसारवृक्षो भूर्भुवःस्वः तरुः; भूर्भुवःस्वस्तरुः। अर्थात् भूर्भुवःस्वस्तरु नामक लोकत्रयरूप संसारवृक्ष ही भूर्भुवःस्वस्तरु हैं। वृक्षकी विविध शाखाओंकी तरह यह संसारवृक्ष भी इन तीन लोकरूपा शाखाओंमें विभाजित हैं। इस भूः इत्यादि लोककी तरहसे परमात्मा स्वयं ही अभिव्यक्त होनेसे वे भूर्भुवःस्वस्तरु कहलाते हैं।

उन भूः आदि लोकवाले संसारवृक्षकी तरह स्थित परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९६८ -

ॐ ताराय नमः

संसारसे पार लगानेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is The Eternal Redeemer.

संसारसागरं तारयन् तारः अर्थात् संसारसागरसे तारनेके कारण भगवान् तार हैं। परमात्मा स्वयं नित्य मुक्तस्वरूप, जीवोंकी आत्मा अर्थात् सत्य हैं। इसे नहीं जाननेके कारण ही जीव संसारके बन्धनमें विद्यमान है। किन्तु जो परमात्माकी शरणमें जाता है, वे अपने सत्यस्वरूप परमात्माको आत्माकी तरह जानकर संसारसे परे हो जाता है। इस प्रकार परमात्मा ही मानों उन्हें संसारसागरसे पार लगाते हैं, इसलिए वे तार कहलाते हैं। उन संसारसे पार लगानेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९६९ -

ॐ सवित्रे नमः

सम्पूर्ण सृष्टिके जनक परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one Who is the Eternal Father.

सर्वस्य लोकस्य जनक इति सविता। अर्थात् सम्पूर्ण लोकके उत्पन्न करनेवाले होनेसे भगवान् सविता हैं। परमात्मा ही मायारूपा योनिमें चेतनता रूप बीजका आदान करते हैं, जिसकी वजहसे इस चराचर सृष्टिकी उत्पत्ति होती है। इस प्रकार परमात्मा ही सम्पूर्ण जगतके उत्पन्न करनेवाले जनक अर्थात् पिता होनेसे वे सविता कहलाते हैं।

उन सम्पूर्ण सृष्टिके जनक परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

\- ९७० -

ॐ प्रपितामहाय नमः

ब्रह्माजीके पिता परमात्माको नमस्कार।

I salute the one Who is the Great-grandsire.

पितामहस्य ब्रह्मणो अपि पिता इति प्रपितामहः। अर्थात् पितामह ब्रह्माजीके भी पिता होनेसे प्रपितामह हैं। सृष्टिमें विविध योनियां जननक्रियाके द्वारा आगे अपनी संततिको बनाए रखते हैं। उन सबके उत्पन्न करनेवाले सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी हैं। एवं सबके पितामह ब्रह्माजी भी परमात्माकी सर्व प्रथम अभिव्यक्ति होनेसे परमात्मा प्रपितामह कहलाते हैं।

पितामह ब्रह्माजीके भी पिता परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९७१ –

ॐ यज्ञाय नमः

यज्ञस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one Who is Yagna.

यज्ञात्मना यज्ञः। अर्थात् यज्ञरूप होनेसे वे यज्ञ हैं। यज्ञ अर्थात् निष्काम व निरपेक्षभाव से अन्य की प्रसन्नता एवं कल्याण हेतु कर्म करना है। परमात्मा जीवके लिए सृष्टिकी रचना करते हैं, कर्मका सामर्थ्य, परिस्थिति तथा कर्मका फल प्रदान करते हैं। उन सबके पीछे प्रेरणा मात्र प्रेम और करुणाकी अभिव्यक्ति है। इस प्रकार कर्म करना परमात्माका स्वभाव ही होनेसे वे स्वयं यज्ञस्वरूप हैं।

उन यज्ञस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९७२ –

ॐ यज्ञपतये नमः

यज्ञके अधिष्ठाता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Lord of Yagnas.

यज्ञानां पाता, स्वामी वा यज्ञपतिः, 'अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च।' इति गीतासु। अर्थात् यज्ञके पालक अर्थात् स्वामी होनेसे यज्ञपति हैं। गीता में स्वयं भगवान् बताते हैं कि – 'सब यज्ञोंका भोक्ता और प्रभु मैं ही हूं।' परमात्मा स्वयं ही वेदोंके माध्यमसे जीवको कर्ममें यज्ञभावके समावेशकी प्रेरणा देकर, यज्ञकर्मके वे ही पालक बनते हैं। तथा उन–उन यज्ञकर्मको ग्रहण करके उनका फल देते हैं। इस प्रकार वे यज्ञके अधिष्ठाता होते हैं।

उन यज्ञके अधिष्ठाता परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९७३ -

ॐ यज्वने नमः

यज्ञ करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute who is Performer of Yagna.

यजमानात्मना तिष्ठन् यज्वा अर्थात् यजमानरूपसे स्थित होनेके कारण यज्वा हैं। परमात्मा न केवल यज्ञके अधिष्ठाता होते हैं, किन्तु वे सर्वात्मा होनेकी वजहसे जीवरूपसे भी स्थित होकर यज्ञ करनेवाले यजमान भी बनते हैं। इसलिए वे यज्वा अर्थात् यज्ञ करनेवाले यजमान भी कहलाते हैं।

उन यजमानरूपसे स्थित होकर यज्ञ करनेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १७४ –

ॐ यज्ञांगाय नमः

यज्ञके अंगभूत परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one Who is Limbs of Yagnas.

यज्ञा अंगानि अस्येति वराहमूर्तिः यज्ञांगः; यज्ञ वराहभगवान्के अंग हैं, इसलिए वे यज्ञांग हैं। हरिवंश पुराणमें यज्ञके विविध अंगोंको वराहके अंगोंकी उपमा देकर यज्ञको वराह बताया है। सर्वात्मारूप परमात्मा ही यज्ञके विविध अंगोंकी आत्माकी तरह से विराजमान हैं। इसलिए वे यज्ञांग कहलाते हैं।

उन यज्ञके अंगभूत परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९७५ –

ॐ यज्ञवाहनाय नमः

यज्ञके वहन करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is

Accomplisher of Yagnas.

फलहेतुभूतान् यज्ञान् वाहयति इति यज्ञवाहनः। अर्थात् फलके हेतुभूत यज्ञोंका वहन करते हैं, इसलिए वे यज्ञवाहन हैं। जीवके द्वारा किए गए यज्ञका उन्हें अवश्य फल प्राप्त होता है। कर्मफलदाता परमात्मा स्वयं यज्ञकर्मका फल देते हैं। इस वजहसे जीव यज्ञकर्म हेतु प्रेरित होकर यज्ञका वहन करता हैं। अतः परमात्मा यज्ञवाहन कहलाते हैं। उन यज्ञका वहन करनेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९७६ –

ॐ यज्ञभृते नमः

यज्ञके रक्षक परमात्मा को नमस्कार।

I salute the One Who is Protector of Yagnas.

यज्ञं बिभर्ति पाति इति वा यज्ञभृत्। अर्थात् यज्ञको धारण करते अथवा उसकी रक्षा करते हैं, इसलिए भगवान् यज्ञभृत् हैं। यज्ञसे ही परमात्मा सृष्टिका सृजन तथा संचालन करते हैं। सृष्टिके निर्वाह हेतु कर्ममें यज्ञका समावेश अत्यधिक आवश्यक है। परमात्मा यज्ञका उत्तम फल देकर स्वयं इस यज्ञकी मानों रक्षा करते हैं, इसलिए वे यज्ञभृत् कहलाते हैं।

उन यज्ञके रक्षक परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९७७ –

ॐ यज्ञकृते नमः

यजमानरूप से स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Creator of Yagnas.

जगदादौ तदन्ते च यज्ञं करोति, कृन्तति इति वा यज्ञकृत्। अर्थात् जगत्के आरम्भ और अन्तमें यज्ञ करते अथवा काटते हैं, इसलिए वे यज्ञकृत् हैं। परमात्मा स्वयं जगतकी उत्पत्ति जीवोंके उद्धार हेतु यज्ञभावसे युक्त होकर करते हैं। इतना ही नहीं, जीवोंके कल्याणके लिए ही वे जगतका प्रलय भी करते हैं। इस प्रकार यज्ञभावसे युक्त होकर सृष्टि, स्थिति व प्रलय करनेके कारण वे यज्ञकर्ता कहलाते हैं। उन यज्ञकर्ता परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९७८ -

ॐ यज्ञिने नमः

यज्ञस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Receptacle of Yagnas.

यज्ञानां तत्समाराधनात्मनां शेषीति यज्ञी। अर्थात् अपने आराधनात्मक यज्ञोंके शेषी अर्थात् शेषकी पूर्ति करनेवाले हैं, इसलिए वे यज्ञी हैं। यज्ञकर्म अनेकों देवताओंके प्रति आहुति देते हुए सम्पन्न किया जाता है। उन देवताओंके माध्यमसे परमात्मा स्वयं आहुति ग्रहण करते हैं, इस प्रकार यज्ञको सम्पूर्ण करते हैं। इसलिए वे यज्ञी कहलाते हैं।

उन यज्ञीरूपसे स्थित परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९७९ –

ॐ यज्ञभुजे नमः

यज्ञके रक्षक एवं भोक्ता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one Who is Enjoyer of Yagnas.

यज्ञं भुंक्ते, भुनक्ति इति वा यज्ञभुक्। अर्थात् यज्ञको भोगते अथवा उसकी रक्षा करते हैं, इसलिए वे यज्ञभुक् हैं। सृष्टिके हितके लिए, जीवोंके द्वारा किए गए यज्ञकी भगवान् स्वयं रक्षा करते हैं, तथा यज्ञमें दी गई आहुति परमात्मा स्वयं ग्रहण करते हैं, इसलिए वे यज्ञभुक् कहलाते हैं।

उन यज्ञके रक्षक तथा भोक्तास्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९८० –

ॐ यज्ञसाधनाय नमः

यज्ञके द्वारा साधनेयोग्य परमात्माको नमस्कार।

I salute the one Who is Achieved by Yagnas.

यज्ञाः साधनं तत्प्राप्तौ इति यज्ञसाधनः। अर्थात् यज्ञ उनकी प्राप्तिका साधन है, इसलिए वे यज्ञसाधन हैं। जीव कर्ममें यज्ञभावका समावेश करता है, तब ही वह संकुचितासे मुक्त होकर सात्विक अन्त:करणसे युक्त होता जाता है। सात्विक अन्त:करणसे ही परमात्माका ज्ञान प्राप्त करके उन्हें अपनी आत्माकी तरहसे पाया जाता हैं, इसलिए वे यज्ञके द्वारा साधनेयोग्य यज्ञसाधन कहलाते हैं।

उन यज्ञसाधनरूप परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९८१ –

ॐ यज्ञान्तकृते नमः

यज्ञफलदाता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the Giver of Fruits of Actions.

यज्ञस्यान्तं फलप्राप्तिं कुर्वन् यज्ञान्तकृत्। अर्थात् यज्ञका अन्त अर्थात् उसके फलकी प्राप्ति करानेके कारण वे यज्ञान्तकृत् हैं। जीवके द्वारा किए गए यज्ञका अन्त अर्थात् फल, कर्मफलप्रदाता भगवान्के द्वारा दिया जाता है, इसलिए वे यज्ञका अन्त करनेवाले यज्ञान्तकृत् कहलाते हैं।

उन यज्ञका फल देनेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९८२ -

ॐ यज्ञगुह्याय नमः

आत्मज्ञानरूप यज्ञस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Secret of Yagnas.

यज्ञानां गुह्यं ज्ञानयज्ञः, अर्थात् यज्ञोंमें ज्ञानयज्ञ गुह्य हैं, इसलिए वह यज्ञगुह्य कहलाता है। ज्ञानयज्ञमें विवेककी अग्नि प्रज्ज्वलित करके उसमें अज्ञानकी आहुति दी जाती है, जिसके परिणामस्वरूप परमात्मा आत्मस्वरूपसे प्रकाशित होते हैं। एवं परमात्मा ही इस रहस्यमय यज्ञस्वरूप होनेसे वे यज्ञगुह्य कहलाते हैं।

उन आत्माके ज्ञानरूप यज्ञकी तरह स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९८३ -

ॐ अन्नाय नमः

अन्नस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is The Food.

अद्यते भूतैः अत्ति च भूतान् इति अन्नम्। अर्थात् भूतोंसे खाये जाते हैं वा भूतोंको खाते हैं, इसलिए अन्न हैं। सम्पूर्ण जगतकी यह व्यवस्था है कि जहां एक जीव अन्यका भोजन बनता है। तथा स्वयं परमात्मा ही सबकी आत्मा होनेसे वे ही मानों अन्योन्य खाते हैं, अथवा खाए जाते हैं। इसलिए वे अन्न कहलाते हैं।

उन अन्नस्वरूप परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९८४ –

ॐ अन्नादाय नमः

अन्नको खानेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one Who is the Swallower of Food.

अन्नम् अत्ति इति अन्नदः। अर्थात् अन्नको खानेवाले होनेसे अन्नाद कहलाते हैं। जीव अन्नको खाकर जीवित रहता है। तथा जीवकी तरहसे स्वयं परमात्मा ही स्थित होनेसे जीवके माध्यमसे मानों परमात्मा ही भोजन कर रहे हैं। इसलिए वे अन्नको खानेवाले अन्नाद कहलाते हैं।

उन अन्नको खानेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९८५ -

ॐ आत्मयोनये नमः

जगतके कारणभूत परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Material Cause.

आत्मैव योनिः उपादानकारणं नान्यदिति आत्मयोनिः। अर्थात् आत्मा ही योनि अर्थात् उपादान कारण हैं इसलिए भगवान् आत्मयोनि हैं। परमात्मा ही जगत के एकमात्र सत्य हैं। जिस प्रकार एक ही जलतत्त्व अनेकों लहरें, फेनें, बुलबुलोंकी तरह अभिव्यक्त होनेसे उन सबके उपादान कारण होता है, वैसे ही अपनी मायाशक्तिसे परमात्मा भी इन समस्त नामरूपात्मक जगतके उपादान कारण बनते हैं, इसलिए वे आत्मयोनि कहलाते हैं। उन जगतके उपादानकारण परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९८६ –

ॐ स्वयंजाताय नमः

स्वयंजात परमात्मा को नमस्कार।

I salute the One Who is Self-born.

निमित्तकारणमपि स एवेति दर्शयितुं स्वयंजातः इति। अर्थात् निमित्तकारण भी वही है, यह दिखलानेके लिए स्वयंजात कहा गया है। परमात्मा अपनी मायाशक्तिसे जगतके उपादान कारण तथा चेतनाकी दृष्टिसे निमित्तकारण अर्थात् वे जगतके अभिन्न निमित्त–उपादान कारण है। इस प्रकार वे स्वयं ही मानों कि जगतकी तरह जन्मे होनेकी वजहसे स्वयंजात हैं।

उन स्वयंजात परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९८७ –

ॐ वैखानाय नमः

वराहरूपसे धरती खोंदनेवाले परमात्माको नमस्कार।

I salute the one who is incarnated as Varaah.

विशेषेण खननात् वैखानः, धरणीं विशेषेण खनित्वा पातालवासिनं हिरण्याक्षं वाराहं रूपमास्थाय जघानेति पुराणे प्रसिद्धम्। अर्थात् विशेषरूपसे खोदनेके कारण वैखान हैं। पुराणोंमें यह प्रसिद्ध है कि भगवान्ने वराहरूप धारणकर पृथ्वीको विशेषरूपसे खोदकर पातालवासी हिरण्याक्षको मारा था। इसलिए वे वैखान कहलाते हैं।

उन वराहरूपसे धरतीका खनन करनेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९८८ -

ॐ सामगायनाय नमः

सामगान करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Singer of Saama Songs.

सामानि गायति इति सामगायनः। अर्थात् सामगान करते हैं, इसलिए सामगायन हैं। सामवेद गीतिप्रधान होता है। इसका गायन करना विशेष ज्ञान, एकाग्रता व कलाकी अपेक्षा रखता है। ऐसी विशेषतासे युक्त स्वयं परमात्माकी ही विभूति हो सकता है। इसलिए वे ही मानों सामवेदका गायन करनेवालेकी तरह विराजमान हैं।

उन सामगान करनेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९८९ –

ॐ देवकीनन्दनाय नमः

देवकीपुत्र श्रीकृष्ण परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one Who is the Joy of Devaki.

देवक्याः सुतो देवकीनन्दनः। अर्थात् देवकीके पुत्र होनेसे देवकीनन्दन हैं। द्वापरयुगमें भगवान्ने स्वयं इस जगतमें श्रीकृष्णरूपसे अवतार लिया, तब वे देवकीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। इसलिए वे देवकीनन्दन कहलाएं।

उन देवकीके पुत्र श्रीकृष्ण परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९९० –

ॐ स्रष्ट्रे नमः

जगत् स्रष्टा परमात्माको नमस्कार।

I salute the one Who is the Creator.

स्रष्टा सर्वलोकस्य। अर्थात् सम्पूर्ण लोकोंके रचयिता होनेसे वे स्रष्टा हैं। परमात्मा स्वयं अपनी मायाशक्तिको धारण करके सम्पूर्ण जगतका निर्माण करते हैं, इसलिए वे स्रष्टा कहलाते हैं।

उन जगतके स्रष्टा परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९९१ –

ॐ क्षितीशाय नमः

पृथ्वीपति परमात्माको नमस्कार।

I salute the one who is Lord of the Earth.

क्षितेः भूमेरीशः क्षितीशः दशरथात्मजः। अर्थात् क्षिति अर्थात् पृथ्वीके ईश अर्थात् स्वामी होनेके कारण दशरथपुत्र क्षितीश हैं। धर्मकी स्थापना हेतु परमात्मा स्वयं ही राजा दशरथके पुत्र श्रीरामकी तरह अवतरित हुए थे। श्रीरामने सम्पूर्ण पृथ्वीको असुरोंके आतंकसे मुक्त करके धर्मकी स्थापना की थी। इसलिए वे पृथ्वीके स्वामी क्षितीश कहलाते हैं।

उन पृथ्वीके स्वामी परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९९२ –

ॐ पापनाशनाय नमः

पापनाशन परमात्माको नमस्कार।

I salute the one who is Annihilator of Sins.

कीर्तितः पूजितः ध्यातः स्मृतः पापराशिं नाशयन् पापनाशनः। 'पक्षोपवासाद् यत् पापं पुरुषस्य प्रणश्यति। प्राणायामसहस्रेण यत्पापं नश्यते नृणाम्।। इति वृद्धशातातपे। अर्थात् कीर्तन, पूजन, ध्यान और स्मरण करनेपर सम्पूर्ण पापराशिका नाश करनेके कारण भगवान् पापनाशन हैं। वृद्धशातातपका कथन है – 'एक पक्षतक उपवास करनेसे पुरुषका जो पाप नष्ट होता है तथा एक सहस्र प्राणायम करनेसे जो पाप नष्ट होता है, वह श्रीहरिका क्षणमात्र ध्यान करनेसे नष्ट हो जाता है।' अतः वे पापनाशन कहलाते हैं। उन पापनाशन परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९९३ -

ॐ शंखभृते नमः

शंखको धारण करनेवाले परमात्माको नमस्कार।

I salute the one who is Bearer of the Divine Conch Paanchajanya.

पांचजन्याख्यं भूताद्यहंकारात्मकं शंखं बिभ्रत शंखभृत् अर्थात् भूतादि अहंकाररूप पांचजन्य नामक शंख धारण करनेसे भगवान् शंखभृत् हैं। यह समस्त सृष्टि परमात्माका ही विराटशरीर है। चतुर्भुज भगवान् विष्णुकी एक भुजामें धारण किया गया शंख समष्टि अहंकाररूप है। इसे धारण करके सृष्टिमें धर्मके साम्राज्यका मानों उद्घोष करते हैं। पांचजन्य शंखके धारण करनेवाले उन परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९९४ –

ॐ नन्दकिने नमः

नन्दकी नामक खडगसे युक्त परमात्माको नमस्कार।

I salute the one Who is Weilder of Nandaka Sword.

विद्यामयो नन्दकाख्यः असि अस्य इति नन्दकी। अर्थात् जिनके पास नन्दक नामक खडग है, इसलिए वे नन्दकी हैं। ज्ञानरूप खडगसे अज्ञानरूप संसारको समाप्त किया जाता है। भगवान्ने इस ज्ञानमय नन्दकी नामक खडगको धारण किया होनेसे वे नन्दकी कहलाते हैं।

उन नन्दकी नामक खडगको धारण करनेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९९५ –

ॐ चक्रिणे नमः

सुदर्शन चक्रधारी परमात्माको नमस्कार।

I salute the one Who is Bearer of Sudarshana Chakra.

मनस्तत्त्वात्मकं सुदर्शनाख्यं चक्रमस्य अस्ति इति, अर्थात् मन तत्त्वात्मक सुदर्शन चक्र भगवान्के पास है, इसलिए वे चक्री हैं। भगवान्की एक भुजामें विराजमान सुदर्शन चक्र उनकी ज्ञानमयी दृष्टिका सूचक है। वे ज्ञानकी चक्षुसे ही सम्पूर्ण जगतको देखते हैं। इसलिए वे सुदर्शन चक्री कहलाते हैं।

उन सुदर्शन चक्रके धारण करनेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९९६ –

ॐ शांर्गधन्विने नमः

शांर्ग नामक धनुषधारी परमात्माको नमस्कार।

I salute the one Who is Wielder of Saaranga Bow.

इन्द्रियादि अहंकारात्मकं शांर्ग नाम धनुः अस्य अस्ति इति। अर्थात् उनका इन्द्रियकारण राजस अहंकाररूप शांर्ग नामक धनुष है, इसलिए वे शांर्गधन्वा हैं। भगवान् जगतकी रक्षा हेतु शांर्गनामक धनुष धारण करते हैं। इसलिए वे शांर्गधन्वा कहलाते हैं।

उन शांर्ग नामक धनुषके धारण करनेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९९७ –

ॐ गदाधराय नमः

ज्ञानरूप गदाधारी परमात्माको नमस्कार।

I salute the one Who is Bearer of the Divine Mace Kaumodakee.

बुद्धितत्त्वात्मिका कौमोदकीं नाम गदां वहन्गदाधरः। अर्थात् बुद्धि तत्त्वात्मिका कौमोदकी नामक गदा धारण करनेसे वे गदाधर हैं। भगवान्की एक भुजामें गदा विराजमान है। यह दीखाता है कि यह बुद्धि रूप गदा अर्थात् यथार्थके ज्ञान व निश्चयसे सदैव युक्त रहकर जगत्की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करते हैं।

उन सदैव सत्यके ज्ञानसे युक्त गदाधारी परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९९८ –

ॐ रथांगपाणये नमः

रथके चक्रको धारण करनेवाले परमात्माको नमस्कार।

I salute the one Who is Bearer of Wheel of Chariot.

रथांग चक्रमस्य पाणौ स्थितमिति रथांगपाणिः। अर्थात् भगवान्‌के हाथमें रथांग अर्थात् चक्र है, इसलिए वे रथांगपाणि हैं। धर्मकी स्थापना हेतु अधर्मके विनाशके लिए भगवान्‌ने स्वयं अपनी शस्त्र न धारण करनेकी प्रतिज्ञाके विपरीत जाकर रथके पहिएको शस्त्रकी तरह हाथमें धारण किया था। यह रथांगपाणि होना उनकी दृष्टिमें धर्मका सर्वोपरि स्थान होनेका सूचक है। उन रथके चक्रको धारण करनेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९९९ –

ॐ अक्षोभ्याय नमः

अक्षुब्ध परमात्माको नमस्कार।

I salute the one Who is the Imperturbable.

सशक्त शस्त्रधारणात् अशक्यक्षोभणः इति अक्षोभ्यः। अर्थात् इन सब शस्त्रोंके कारण उन्हें क्षोभित नहीं किया जा सकता, इसलिए वे अक्षोभ्य हैं। भगवान्के पास पूर्वमें बताए गए समस्त सशक्त शस्त्र है। उन सशक्त शस्त्रोंको कोई अत्यन्त सशक्त ही धारण करनेमें समर्थ होता है। ऐसे सशक्त शस्त्रोंसे सुसज्जित सशक्त भगवान् किसी भी परिस्थितिमें क्षुब्ध नहीं होते हैं। इसलिए वे अक्षोभ्य कहलाते हैं। उन अक्षुब्ध परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १००० –

ॐ सर्वप्रहरणायुधाय नमः

समस्त प्रहार करनेवाले आयुधोंसे युक्त परमात्माको नमस्कार।

I salute the one in Who is the Supreme Conqueror.

केवलम् एतौ अन्त्यायुधान् यस्य इति न नियम्यते, अपि तु सर्वाणि प्रहरणायुधानि अस्येति सर्वप्रहरणायुधः। भगवान्के केवल इतने ही आयुध हों, ऐसा नहीं हैं, बल्कि प्रहार करनेवाली सभी वस्तुएं उनके आयुध हैं, इसलिए वे सर्वप्रहरणायुध हैं। उक्त बताए गए समस्त आयुध दृष्ट है, किन्तु उनके पास मात्र इतने ही आयुध नहीं है। अपितु अनेकों प्रहार करनेवाले अदृष्ट भी विराजमान है। ऐसे समस्त प्रहार करनेवाले आयुधोंसे सुसज्जित परमात्माको सादर नमन।